समाज व संस्कृति का संगीत से अन्तर्सम्बन्ध

✧ डॉ. प्रभा भारद्वाज

संगीत का समाज से घनिष्ठ अथवा अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है अर्थात एक दूसरे के बिना दोनों का कोई अस्तित्व नहीं है। व्यक्ति समाज की इकाई है जिसके सम्मिलित स्वरूप पर समाज की उन्नति व समृद्धि निर्भर करती है। मानव जीवन में संस्कृति और संस्कृति में संगीत का एक महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन ग्रन्थ के किसी भी पृष्ठ को हम पलट कर देखें तो वहाँ संगीत अवश्य मिलेगा।

भूख, प्यास, निद्रा और काम मनुष्य के साथ–साथ समस्त प्राणी मात्र के जीवन में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं। उनका समाधान भी सभी प्राणी किसी न किसी रूप में या किसी भी साधन से कर ही लेते हैं। पशु–पक्षियों को जो प्रकृति देती है वे सन्तोष से खाकर अपनी क्षुधाग्नि को शान्त कर लेते हैं किन्तु मानव एक बुध्दिजीवी प्राणी होने के कारण अनेक प्रकार की भूख का अनुभव करता है जैसे–मानसिक क्षुधा, बौद्धिक क्षुधा आदि। यही कारण है कि जो बातें अन्य प्राणियों और मनुष्य में समान हैं उनमें भी वह अपनी बुद्धि के प्रयोग से विशेषता उत्पन्न कर लेता है। मानव की इसी बौद्धिक क्षुधा का परिणाम है अनेक कलाओं का जन्म तथा उनका विकास। यदि हम इसका अध्ययन करें तो ज्ञात होता है कि इन कलाओं के बिना जीवन चक्र नहीं रूकने वाला नहीं तथापि उनके अभाव में जीवन कहीं अधूरा, एकांगी और रसशून्य है। मानव हृदय की सूक्ष्म भावनाओं की सुन्दर अभिव्यक्ति ही ललित कला की संज्ञा प्राप्त करती है। समस्त ललित कलाओं में संगीत का स्थान निर्विवाद सर्वोत्तम है। यूं तो इन समस्त ललित कलाओं का स्थान मानव जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इनमें संगीत का स्थान निर्विवाद सर्वोत्तम है। संगीत मानव से जुड़ा है और मानव समाज से और समाज संस्कृति से। अतः स्वतः ही संगीत समाज और संस्कृति से जुड़ जाता है।

संगीत के आधारभूत तत्व स्वर, ताल और लय है जिनमें मानव मन को आकर्षित करने की अद्भुत क्षमता है जिसका प्रयोगात्मक स्वरूप मानव की सहज प्रवृतियों से स्पष्ट उजागर होता है। उदाहरण स्वरूप मानव अपनी शिशु अवस्था में मधुर ध्वनियों जैसे नुपुर, घण्टी आदि की ध्वनि से स्वतः ही आकर्षित हो जाता है। इसका स्पष्ट उदाहरण एक और है – मां के द्वारा सुनाई गई लोरी, जो बिना किसी कलात्मक प्रयास के दी जाती है किन्तु स्वर और लय के निश्चित संयोग से शिशु मीठी नींद सो जाता है या फिर वेगपूर्ण स्वर लहरियों को सुन कर अनायास ही नाचने कूदने लगता है। इसी विषय में 'संगीत–रत्नाकर' में स्पष्ट रूप से लिखा है–''जिस बालक को अभी विषयों का ज्ञान भी नहीं हुआ है, जो केवल रोना और सोना ही जानता है वह भी गीत के अमृत का पान कर अपना रूदन समाप्त कर देता है और प्रफुल्लित हो जाता है।'' बाल्य काल में ये प्रवृतियां सहज ही स्पष्ट रूप से उजागर हो जाती हैं किन्तु बड़े होने पर सामाजिक संकोच से ये प्रवृतियां भले ही उजागर न हों परन्तु यह तो निश्चित है कि संगीत के आस्वादन से मनुष्य को सुखद अनुभूति तथा मानसिक शान्ति का आभास होता है।

संगीत तो प्रारम्भ से ही समाज व संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। कला संस्कृति का दर्पण है और संस्कृति कला की प्रेरणा। अतः संगीत का स्तर संस्कृति के स्तर पर ही निर्भर करता है। संगीत के माध्यम से किसी भी देश, स्थान, जीवन, व्यापार, रहन–सहन और खान–पान आदि का पूर्ण विवरण मिल जाता है। भाषा के माध्यम से हम किसी देश की परिस्थितियों का सरलता से नहीं जान सकते जितना कि संगीत से। मानव जाति के समान ही संगीत भी अत्यन्त प्राचीन है। कहते हैं कि जब भाषा का जन्म भी नहीं हुआ था तब संगीत का जन्म हो चुका था। आदि मानव का अपनी बात एक से दूसरे तक पहुंचाने का माध्यम शब्द नहीं अपितु संगीत था। संगीत ही एक ऐसी भाषा थी जिसके माध्यम से आदि मानव हास–परिहास, प्रसन्नता, शोक और विलाप आदि भावनाओं का प्रकटीकरण कर सकता था।

आदिकाल से आधुनिक काल तक अनेक ललित कलाओं ने जन्म लिया और समाज में आज भी विद्यमान है। किन्तु संगीत को इन समस्त कलाओं में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है क्योंकि यह कला सर्वजन सुलभ व सहज ही समझ आने वाली कला है जिसका मूल्यांकन विद्वान से लेकर अनपढ़ तक कर सकता है। कण्ठ तन्त्रिका मानव की स्वाभाविक देन है जिसके कारण वह किसी भी रूप में संगीत का आनन्द ले सकता है। लोक संगीत में हम संगीत की प्राथमिक अवस्था देख सकते हैं। जिसमें मात्र कुछ स्वरों के प्रयोग से ही शब्दों या पद वाक्यों की पुनरावृत्ति करके मधुर संगीत का निर्माण कर लेते हैं।

प्राचीन संस्कृति का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि उसमें लोक–संगीत का बहुत महत्व था। उस काल के वाद्य अवश्य अविकसित व अपरिष्कृत थे। एक तन्त्री, द्वितन्त्री, वंशी जैसे वाद्य तथा ढोलक जैसे चर्मवाद्य इनके संगीत के स्वाभाविक उपकरण होते थे। ''शास्त्रीय संगीत जैसी विकसित एवं परिष्कृत शैली सभ्यता के विकास के साथ–साथ संभव हो सकती है इसलिए संगीत के इतिहास को संस्कृति के विकास से अलग नहीं किया जा सकता।''

भारतीय संगीत की पृष्ठभूमि आध्यात्मिक रही है। संगीत साधना का विषय है और इस प्रकार यह अध्यात्म से स्वतः ही जुड़ जाता है। विविध सम्प्रदायों की समस्त प्रवृत्तयाँ संगीत से संबद्ध है। हिन्दुओं के अनेक देवी देवता संगीत के अनन्य प्रेमी माने गए हैं। मन्दिरों में भजन

सहायक आचार्य, संगीत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

कीर्तन होना, आरती का गाया जाना, गुरूद्वारों में शबद–कीर्तन का पाठ और गिरिजाघरों में प्रार्थनाओं का गाया जाना, ये सब समाज और संस्कृति से संगीत के संबंध को ही उजागर करते हैं। समाज और संस्कृति से हम धर्म को अलग नहीं कर सकते और धर्म से संगीत कभी अलग नहीं हो सकता। मनुष्य धर्म से और धर्म से संगीत कभी भिन्न नहीं हो सकते। अतः स्पष्ट हो जाता है कि संगीत में आध्यात्मिक पक्ष होने के कारण मनुष्य के जीवन काल में संगीत से महत्वपूर्ण संबंध बना रहता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसका मन व चित्त दोनों ही चंचल प्रवृति के हैं। इसलिए वह सदैव समभाव नहीं रह पाता। जीवन में सुख–दुःख, हर्ष–उल्लास सभी का समावेश रहता है। अपनी चंचल प्रवृति के कारण मनुष्य अपने जीवन में नित–नवीनता की कल्पना करता रहता है। अपनी इस कल्पना को साकार करने के लिए वह बौद्धिक रूप से सक्षम भी हैं। मनुष्य अपने जीवन में एकरसता की अपेक्षा बहुरंगी स्वरूप को देखने में अधिक रूचि रखता है। इसी प्रयत्न में कला का जन्म होता है हमारे दैनिक जीवन में भी संगीत का समावेश रहता है प्रायः गृहणियाँ गृहकार्य करते समय गुनगुनाती रहती है जिससे उन्हें कार्य बोझ नहीं लगता और चित्त भी प्रफुल्लित रहता है कभी–कभी मनुष्य जब थकान अनुभव करता है तब उसे यदि हल्का–फुल्का संगीत (Light Music) सुनवाया जाए तो वह तरोताजा महसूस करता है।

मानवमात्र में सौन्दर्याकर्षण स्वाभाविक है। इस दृष्टि से भी संगीत का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य अपने दुःखों को सदैव विस्मृत करना चाहता है और सुखों की खोज में लगा रहता है समस्त कलाओं में संगीत ही एक ऐसी कला है जो मानव की थकान को कम करके, चिन्ताओं से मुक्ति दिलवाकर मनको शान्ति प्रदान कर उसमें नवजीवन और स्फुर्ति का संचार कर देती है। उस समय मनुष्य का ध्यान सौन्दर्य की और आकर्षित हो सौन्दर्य की रचना करता है। अपने इसी सौंदर्यशास्त्रीय पक्ष के कारण संगीत समाज और संस्कृति से अपना सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। मनुष्य जिस देश का वासी होता है उस देश से उसका भावनात्मक सम्बन्ध रहता है। देशभक्ति का संगीत मानव मात्र में देशभक्ति की भावना को उत्तेजित कर इस भावना को प्रबल बनाने में सहयोग प्रदान करता है। इसका स्पष्ट उदाहरण ''वन्देमातरम्'' है। आजादी के दीवानों ने यह गीत गाते हुए हंसते–हंसते फांसी का फन्दा अपने गले में फूलों का हार समझ कर डाल लिया और अपने देश पर शहीद हो गए। यह संगीत का ही प्रभाव था। इसी प्रकार राष्ट्रभक्ति की भावनाको जागृत करने वाले ऐसे अनेक गीत है जैसे – 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा, सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा, ऐ वतन, ऐ वतन हमकों तेरी कसम, कर चले हम फिंदा और न जाने कितने ही ऐसे गीत है जिनका उल्लेख मैं यहां नहीं कर रही हूँ। भले ही गीत फिल्म संगीत से लिए गए हैं तथापि हम इनकी राष्ट्र भावना को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। इसके अतिरिक्त प्रेम भावना को जागृत करने में भी संगीत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। महात्मागांधी जी का गीत ''वैष्णवजन तो तैने कहिए, पीर पराई जाने रे, तथा ''रघुपति राघव राजा राम'' की पंक्तियाँ प्रार्थना मैदान में एकत्र जन समूह के हृदय में न जाने कितनी ही अपार शक्ति व शान्ति का संचार करवा देती थी।

समाज व संस्कृति का अभिन्न अंग है शिक्षा। संगीत ने अपने समस्त गुणों के कारण शिक्षा के क्षेत्र में भी अपना स्थान बना लिया है। शिक्षा के अभाव में कोई भी समाज उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो सकता। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी में विषय के प्रति रूचि उत्पन्न करना है। शिक्षा बिना रूचि के कठिन तो नहीं किन्तु नीरस अवश्य होती है। अतः बालक की शिक्षा को रूचिकर बनाने के लिए यदि संगीत के माध्यम से शिक्षा दी जाए तो निश्चय ही उसमें विद्या अध्ययन के प्रति रूचि उत्पन्न हो जाएगी। प्रारंभिक कक्षाओं में बालकों की शिक्षा को रूचिकर बनाने के लिए छोटी–छोटी कविताएं, गिनती, और जो कुछ भी शिक्षक पढ़ाना चाहते हैं उन्हें गेय रूप से सिखाने पर बालक उनका अनुसरण कर सरलता से उन्हें याद कर लेते हैं। यही कारण कि आज संगीत को आधुनिक शिक्षण व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। जब अनेक विद्यार्थी एक स्थान पर बैठकर एक साथ कोई गीत, वृन्दगान या वृन्द वादन करते है तब उनमें एकता की भावना का संचार होता है, नियन्त्रक (Conductor) की भूमिका का निर्वाह करने वाले में नियन्त्रण शक्ति का संचार होता है और अन्य विद्यार्थियों में आज्ञा पालन (अनुशासन) की प्रवृत्ति को बल मिलता है। इस प्रकार की शिक्षा देने से बालकों में प्रारम्भ से ही, एकता, अनुशासन, प्रेम की भावना और नैतिकता का जन्म हो जाता है।

समाज के इन क्षेत्रों के अतिरिक्त संगीत ने विज्ञान के क्षेत्र में भी पदापर्ण कर लिया है। अनेक असाध्य रोगों का उपचार आज संगीत द्वारा किया जा रहा है। प्राचीनकाल में भी असाध्य रोगों का उपचार सामवेद के मन्त्रों का गान करके किया जाता था। धीरे–धीरे वैज्ञानिक भी इस तथ्य को स्वीकार करने लगे हैं कि संगीत के माध्यम से मनुष्य और प्रकृति को वशीभूत किया जा सकता है। पेड़–पौधों की उत्पादक क्षमता अधिकतम सीमा तक पहुंचाई जा सकती है। इसके अतिरिक्त औद्योगिक क्षेत्र भी संगीत से अछूता नहीं रहा है। तैयार सामान को बाजार में बेचने के लिए विज्ञापन का सहारा लिया जाता है और यदि विज्ञापन संगीत के माध्यम से किया जाता है तो निश्चित रूप से क्रेता पर उसका प्रभाव पड़ता है। परिणाम स्वरूप वस्तु की बिक्री अधिक होती है और उद्योग से संगीत का संबंध स्पष्ट हो जाता है।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए हम समाज और संस्कृति से संगीत के संबंध को नकार नहीं सकते। संगीत के बिना मानव समाज सूना और निर्जीव है। संगीत मानव के सांस्कृतिक व सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग है।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. संगीत रत्नाकर–भाग–2 पृष्ठ–3 (अनुवादक–लक्ष्मी नारायण गर्ग, संगीत कार्यालय हाथरस, 1964) 2. डा. शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे–संगीत बोध–पृष्ठ–11 3. प्रभुदयाल मित्तल–ब्रज की कलाओं का इतिहास–पृ. 28 4. वसुधा कुलकर्णी–भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान पृ. 8